हिमाचल प्रदेश

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

स्कूलों में आधार, आधार प्लस एवं संवृद्धि कार्यक्रम शुरू

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक पाठशालाओं के बच्चों का उपलब्धि स्तर बढ़ाने के लिए एक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम

प्रिय अध्यापक साथियो!

इस वर्ष हम बच्चों के अधिगम संवर्धन हेतु प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में दो महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम आधार, आधार प्लस एवं संवृद्धि चलाने जा रहे हैं। देशभर में हिमाचल प्रदेश ही एक ऐसा राज्य है जो कि बच्चों के अधिगम संवर्धन पर इस तरह का कार्यक्रम चलाने जा रहा है। इस कार्यक्रम की सफलता पूर्ण रूप से आपके द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर निर्भर करेगी। मैं अपने अध्यापक साथियों को इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन हेतु यह दिशा निर्देश देते समय मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ जो कि अध्यापक वर्ग को आधार, आधार प्लस व संवृद्धि कार्यक्रम लागू करते समय काम आएंगे। यहां यह उल्लेखनीय है कि विस्तृत दिशानिर्देश मार्गदर्शिका के रूप में आप तक पहले ही पहुंच चुके होंगे अथवा पहुंचने वाले होंगे। परन्तु फिर भी विषय के बारे में तुरन्त संदर्भ हेतु आप को संक्षेप में यह दिशा निर्देश दिए जा रहे हैं।

इस के अतिरिक्त यह भी निर्णय लिया गया है कि सतत समग्र मूल्यांकन (CCE) प्रारम्भिक कक्षाओं में सीमित रूप से चलाया जाए। इस का उददेश्य यह है कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली को लागू रखते हुए सतत समग्र मूल्यांकन का लाभ भी अध्यापकों व बच्चों तक पहुंच सके। निस्सन्देह आप इस तरह के कार्यक्रम पहले भी लागू करते आ रहे हैं इसके बावजूद भी अधिक स्पष्टता के लिए निम्न दिशा निर्देश दो खण्डों में आपके ध्यानार्थ लाना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि आप इन दिशा निर्देशों को अक्षरशः लागू करेंगे।

शुभ कामनाओं सहित।

राजीव शर्मा, हि.प्र.से.
मिशन निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान एवं
निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, हि. प्र., शिमला –1

खण्ड -1

कार्यक्रम विवरण

क्र.	कार्यक्रम	लक्ष्य समूह	विषय
1	आधार	कक्षा 1 से 5 (प्रा.)	गणित, हिन्दी, अंग्रेज़ी
2	आधार प्लस	कक्षा 1 से 5 (प्रा.)	गणित, हिन्दी, अंग्रेज़ी
3	संवृद्धि	कक्षा 6 से 8 (उ. प्रा.)	गणित, विज्ञान, अंग्रेजी

प्रथम (NGO) के साथ हुए समझौते के अनुसार इस वर्ष बच्चों का अधिगम स्तर गणित, हिन्दी व अंग्रेजी में बेसलाइन स्तर के पश्चात निम्न सारिणी के अनुसार निश्चित स्तर तक बढ़ाया जाएगा।

निर्धारित लक्ष्य

हिन्दी भाषा

कक्षा	आरम्भिक स्तर	शब्द स्तर	कक्षा पहली की पाठय सामग्री पढ़ना	कक्षा दूसरी की पाठय सामग्री पढ़ना
I	0%	50%	50%	0%
II	0%	0%	50%	50%
III	0%	0%	0%	100%
IV-V	0%	0%	0%	100%

अंग्रेजी

गणित

प्रशिक्षण योजना

जैसे कि आप सभी को यह विदित है कि ये समयबद्ध कार्यक्रम हैं इसलिए निम्नलिखित समयसारिणी का पूरी तरह से पालन किया जाना चाहिए। आधार प्लस कार्यक्रम के संबन्ध में जिला स्तर व खण्ड स्तर पर मुख्य प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम जून–जुलाई, 2009 में पूर्ण किया जा चुका है। ये मुख्य प्रशिक्षक सभी अध्यापकों को सीधे प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

संवृद्धि कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय मुख्य प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है यह मुख्य प्रशिक्षक सीधे तौर पर अध्यापकों को प्रशिक्षण देंगे।

कार्यक्रम की समय सारिणी :

- ✔ **आधार /आधार प्लस कार्यक्रम शीतकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में 20 जुलाई , 2009 से एवं ग्रीष्मकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में 01 सितम्बर, 2009 से प्रारम्भ किया जाना सुनिश्चित किया गया है।**
- ✔ **संवृद्धि कार्यक्रम शीतकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में 10 अगस्त, 2009 से तथा ग्रीष्मकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में 01 सितम्बर, 2009 से प्रारम्भ किया जाना सुनिश्चित किया गया है।**
- ✔ **यह कार्यक्रम इस वर्ष 5 महीनों के लिए लागू किया जाएगा तत्पश्चात् इस कार्यक्रम की पुनरावृति विद्यालय में सामान्य गतिविधियों की तरह जारी रहेंगी।**
- ✔ **प्रार्थना सभा के तुरन्त पश्चात् सभी विद्यालयों में 2 घण्टे का समय आधार व आधार प्लस कार्यक्रम के लिए सुनिश्चित किया गया है। इसके पश्चात् सामान्य अध्यापन स्कूल में पूर्वानुसार चलता रहेगा।**

पाठशालाओं में आधार व आधार प्लस कार्यक्रम की समय सारिणी निम्न रहेगी :

आधार		आधार प्लस	
विषय	समय	विषय	समय
हिन्दी	60 मिनट	हिन्दी	30 मिनट
		पर्यावरण शिक्षा	30 मिनट
गणित	30 मिनट	गणित	30 मिनट
अंग्रेज़ी	30 मिनट	अंग्रेज़ी	30 मिनट

नोट : शीतकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में आधार व आधार प्लस कार्यक्रम प्रातः10:30 – 12:30 तक रहेगा। ग्रीष्मकालीन अवकाश वाली पाठशालाओं में कार्यक्रम प्रातः 9:30 – 11:30 तक रहेगा

सामग्रीः-

- ✔ इस वर्ष आधार प्लस की सामग्री अध्यापकों द्वारा पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है ताकि अध्यापकों को पाठ्यक्रम समय पर पूरा न होने की चिन्ता न हों ।
- ✔ यह सुनिश्चित कर लें कि कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पहले सम्बन्धित सामग्री प्रत्येक पाठशाला व अध्यापकों तक पहुंच जाए।

आवश्यक निर्देश :-

1. आधार व आधार प्लस कार्यक्रम शुरू करने से पहले हर विद्यार्थी का हर एक विद्यालय में बेसलाइन आकलन (Base Line Survery) करना जरूरी है।
2. बेसलाइन आकलन का परिणाम पूर्व निर्देशों के अनुसार हर पाठशाला सूचना पट्ट पर अंकित होना जरूरी है।
3. बच्चों का आकलन जांच प्रपत्र (Testing Tools) के अनुसार हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनुच्छेद और गणित में घटाव से शुरू करें।
4. इसके पश्चात् बच्चों को उनके स्तरानुसार समूहित करना होगा।
5. आधार प्लस समूह के बच्चे हर विषय में तीन स्तर की गतिविधियां करेंगे। सभी बच्चे प्रथम स्तर की गतिविधियां करते हुए द्वितीय स्तर, तृतीय स्तर की गतिविधियां करेंगे।
6. आधार प्लस में भाषा व पर्यावरण शिक्षा में कहानी समझ के स्तर पर पढ़ने वाले बच्चे रहेंगे। गणित में भाग (तीन अंकों की एक अंक से) स्तर के बच्चे आधार प्लस की कक्षा में बैठेंगे।

मूल्यांकन/आकलन

- ✔ कार्यक्रम का मूल्यांकन : अध्यापक द्वारा हर बच्चे का आकलन व मूल्यांकन 15 दिन बाद किया जाएगा ताकि उसके बढ़ते हुए स्तर को अंकित किया जा सके। संकुल स्तर पर संकुल समन्वयक व प्रथम (NGO) के समन्वयक सभी बच्चों की प्रगति रिपोर्ट तैयार कर उसे हर मास की 20 तारीख तक खण्ड स्तर पर पहुंचाएंगे।
- ✔ खण्ड समन्वयक व प्रथम (NGO) के समन्वयक अपने खण्ड की प्रगति रिपोर्ट तैयार कर हर मास की 25 तारीख तक ज़िला स्तर पर पहुंचाएंगे ताकि हर मास में होने वाली जिला परियोजना अधिकारियों की बैठक में बच्चों के स्तर में सुधार व कार्यक्रम की गतिविधियों पर चर्चा की जा सके।
- ✔ ज़िला आधार समन्वयक व प्रथम के समन्वयक सभी खण्डों की प्रगति रिपोर्ट तैयार कर हर मास की 30 तारीख तक राज्य परियोजना कार्यालय में पहुंचाएंगे।
- ✔ बच्चों के अधिगम स्तर की बढ़ोतरी की जांच के लिए निरन्तर अनुश्रवण करने के लिए सतत् समग्र मूल्याकंन करना होगा ताकि बच्चों की प्रगति के लिए आवश्यक सुधार किया जा सके।
- ✔ मध्यावधि आकलन (Mid Term Assessment) कनिष्ठ बुनियादी अध्यापक प्रशिक्षु (JBT) द्वारा किया जाएगा।
- ✔ अंतिम आकलन (Term End Assessment) अध्यापकों द्वारा किया जायेगा।

कार्यक्रम के समन्वयक

संवृद्धि कार्यक्रम

संवृद्धि कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रारम्भिक स्तर पर तीन विषयों को केन्द्रित किया गया है– गणित, अंग्रेजी व विज्ञान। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों का इन विषयों में ज्ञान संवर्धन करना है। यह ज्ञान संवर्धन विद्यार्थियों की इन सभी विषयों में समझ विकसित करने से होगा। समझ विकसित करने हेतु गणित व विज्ञान विषयों में परियोजना विधि को अधिमान दिया गया है। यह इसलिए कि परियोजना कार्य करते हुए बच्चा सभी आयामों का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करता है व यही अवलोकन उत्सुकता व विषय विशेष के सम्बन्ध में उसकी जानकारी बढ़ाने मे सहायक होते हैं। बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व कारण जानने एवं स्वयं करके सीखने के कौशलों का विकास होगा।

गणित एवं विज्ञान के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में दिए गए प्रशिक्षण के अनुसार निम्नलिखित गतिविधियों को ध्यान में रखा जायेगा।

- विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी उपयोग।
- विज्ञान एवं गणित किट का प्रभावी उपयोग।
- निरूपण विधि का प्रयोग।
- विज्ञान शिक्षा में परियोजना विधि का प्रयोग।
- गतिविधियों, निरूपण तथा परियोजनाओं के लिए अनुदान के रूप में शिक्षण अधिगम सामग्री हेतु दिए गए 500/– रूपए का प्रयोग किया जायेगा।
- परियोजना कार्य एवं गतिविधियां करने के लिए 700/– रूपए अधिगम संर्वधन कार्यक्रम के तहत दिए गए हैं। इस राशि से इन परियोजनाओं को तैयार करने के लिए सहायक सामग्री आवश्यकतानुसार खरीदी जा सकती है।
- राज्य परियोजना कार्यालय की ओर से अध्यापकों को गतिविधियों पर आधारित पठन सामग्री हेतु सह सामग्री दी गई है। अध्यापक उसका प्रयोग अपनी सुविधानुसार करेंगे।
- बच्चों का गणित एवं विज्ञान विषयों की परीक्षाओं (मध्यावधि एवं अंतिम आकलन) की उपलब्धि स्तर का रिकॉर्ड रखा जाए व विश्लेषण किया जाए कि उनके स्तर में प्रगति हुई है अथवा नहीं।
- अंग्रेजी भाषा में कक्षा छठी से आठवीं तक के बच्चों का अलग से बेसलाइन किया जाएगा।
- विज्ञान विषय में 20 अंकों की असेसमेंट निर्धारण के लिए अध्यापक बच्चों से प्रोजेक्ट बनवाएं और उसके आधार पर ही आकलन कर अंक हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड प्रदेश को भेजें।

अंग्रेजी विषय में बच्चों के उपलब्धि स्तर को बढ़ाने हेतु तैयार रूपरेखा :

उद्देश्य :

- बच्चों को प्रश्न आधारित सीमित वार्तालाप में सक्षम बनाना।
- अंग्रेजी अक्षरों को पहचानना, लिखना तथा शब्दों में प्रयोग करना।
- पैराग्राफ तथा सरल कहानियां पढ़ना।

आकलन

कार्यक्रम के आरम्भ में बच्चों के अधिगम स्तर को आंकने के लिए बेसलाइन परीक्षण किया जाएगा। तत्पश्चात मध्यावधि एवं वर्षान्त में आकलन होगा, इसमें उनके पढ़ने, संक्षिप्त विवरण देने, वार्तालाप तथा लेखन कौशल का आकलन होगा।

कक्षा–कक्ष में प्रभावी अध्यापन के लिए अध्यापकों के लिए साप्ताहिक उद्देश्य (Samvridhi 12 weeks English Manual) पाठ्यचर्या एवं प्रयोग हेतु सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी।

अध्यापक कक्षा में पहले 20 मिनट अभिवादन, परिचय, शब्द पिटारा गतिविधियां, अगले 20 मिनट में वार्तालाप एवं संबंधित गतिविधियां तथा अंतिम 20 मिनट में पढ़ना एवं संबंधित गतिविधियां करवाएंगे।

अंग्रेजी अध्ययन प्रक्रिया में बच्चों को लयबद्ध गान, वार्तालाप एवं पढ़ने जैसी गतिविधियां करवाई जाएंगी।

खण्ड -2

सतत् समग्र मूल्यांकन

इस वर्ष बच्चों के शैक्षिक व सह–शैक्षिक पक्ष में सुधार लाने हेतु सतत् समग्र मूल्यांकन' पद्धति को लागू करने का प्रयास किया गया है।

निर्देश :

- ✔ शिक्षा का मूल उददेश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है जो कि वर्तमान परीक्षा पद्धति से संभव नहीं है। आज तक मुख्यतः मूल्यांकन करने का एकमात्र साधन परीक्षा ही रहा है जिसमें कि विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक पक्ष की ही जांच की जाती है। सतत् समग्र मूल्यांकन' पद्धति को लागू करते हुए आप सह–संज्ञानात्मक पक्ष की भी पूरी जांच करेंगे।
- ✔ उपरोक्त के दृष्टिगत अब मूल्यांकन प्रक्रिया में संज्ञानात्मक तथा संह–संज्ञानात्मक क्षेत्रों को एक दूसरे में समाहित करके 'सतत् समग्र मूल्यांकन' प्रक्रिया को अपनाया गया है जिससे बच्चों में हो रहे परिवर्तन को आंका जा सके, शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति हो सके तथा बच्चों का चहुंमुखी विकास हो सके। इस सत्र से सत्त समग्र मूल्यांकन प्रदेश के सभी स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक लागू किया जाना है। इसके तहत कक्षा I & II तक 100% CCE, कक्षा III- V में 60 % CCE तथा 40% वार्षिक परीक्षा से मूल्यांकन होना तय है। कक्षा VI&VIII तक 40 % CCE तथा 60% वार्षिक परीक्षा से मूल्यांकन होना तय है। मूल्यांकन को सुचारू रूप से लागू करने के लिए प्रत्येक विद्यालय में निम्न सामग्री भेजी गई है :

(i) मूल्यांकन जांच पुस्तिका (Teachers check list register) कक्षा I & II, III, IV, V, VI, VII & VIII दिया गया है। यह कक्षावार है।

(ii) छात्र प्रगति प्रपत्र. इस प्रपत्र में प्रत्येक छात्र की मासिक उपलब्धि को दर्ज किया जाएगा।

(iii) अध्यापक डायरी– अध्यापक अपने विषय को पूरे वर्ष में कब और किस तरह पढ़ाएगा इसके सुनियोजन के लिए।

- ✔ सतत् समग्र मूल्यांकन द्वारा शिक्षण अधिगम के कठिन बिन्दुओं को चिन्हित किया जाना चाहिए। उनके कारणों का पता लगाकर उनका समाधान किया जाए और उपचारात्मक शिक्षण किया जाए। यह प्रक्रिया अध्यापक व विद्यार्थी दोनों के लिए पुनर्बलन (reinforcement) का कार्य करेगी। ध्यान रहे कि विद्यार्थी का उपलब्धि स्तर सतत् (निरन्तर) बढ़ रहा है। अन्यथा उपचारात्मक कदम उठाएं।
- ✔ अध्यापक प्रतिदिन बच्चों के शैक्षिक स्तर का लगातार अवलोकन करते रहें व बच्चे की प्रगति को ध्यान में रखें (चाहे लिखित रूप में अथवा मौखिक)। इस प्रगति के अनुसार वह समय–समय पर पाये गए औसत अवलोकन को रजिस्टर में नोट करते रहें। यह समय अध्यापक अपने पाठ योजना के अनुसार निधारिंत करे परन्तु माह में कम से कम तीन बार प्रत्येक कौशल का अवलोकन करें तथा उसे नोट करें। इन अवलोकनों का औसत प्रत्येक माह रिपोर्ट कार्ड में भरें तथा अभिभावकों से सांझा कर इस पर विवेचना भी करें।
- ✔ भिन्न – भिन्न विषयों में अवलोकनों को मूल्यांकन जांच पुस्तिका में भरने के निम्न उदाहरण दिए गए हैं :

नोट : यह ध्यान देने योग्य है कि अध्यापक सिर्फ एक अवलोकन के आधार पर मूल्यांकन नहीं करेगा। बच्चों को सीखने के बहुत से अवसर प्रदान करेगा।

● भाषा

सुनने का कौशल

अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों के सुनने की क्षमता विकास के लिए बहुत सी चर्चा करते हैं, कहानियां व कविताएं सुनाते हैं। अध्यापक यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र भी उसे समझ के साथ सुन रहे हैं के लिए उनसे प्रश्न पुछते हैं। इससे छात्रों की एकाग्रता, एंव समझ को जांचा जा सकता है। उदाहरणार्थ :

क अध्यापक : तुम्हारा नाम क्या है?
बच्चा : रमेश। अध्यापक मूल्यांकन करते हुए इस छात्र को (1) की श्रेणी में रखेगा।

ख. अध्यापकः तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है? तुम कहां रहते हो? तुम्हारे कितने भाई–बहन हैं?
यदि बच्चा अपना व अपने पिताजी का नाम बता दे लेकिन आगे पूछे गये प्रश्नों को याद नहीं रख सका इस लिए उत्तर नहीं दे पाया। अध्यापक उसे (2) की श्रेणी में रखेगा।

ग. यदि छात्र एकाग्रता से सुनेगा तो धीरे–धीरे वह सभी प्रश्नों के उतर दे पाएगा। अब अध्यापक उसे (3) की श्रेणी में रखेगा।

घ. यदि बच्चा पाठय पुस्तक की विषयवस्तु को एकाग्रता से सुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे सके तो अध्यापक उसे (4) या (5) की श्रेणी में रखेगा।

बोलने का कौशल

क. पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में स्पष्ट देता है। (1)
जैसे – आपका नाम क्या है? आपके पिताजी का क्या नाम है?
आप कहां रहते हो?

ख छोटी–छोटी कविताएं स्पष्ट/सही उच्चारण के साथ बोल पाता है।(2)

ग. कहानियां पढ़ कर स्पष्ट/सही उच्चारण के साथ बोल पाता है। (3)

घ. कहानियां मौखिक/अपनी कल्पना से स्पष्ट/सही उच्चारण के साथ बोल पाता है। (4)

ड•. बोल कर अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्पष्ट/सही उच्चारण के साथ कर पाता है। (5)

पढ़ने का कौशल

पठन कौशल का मूल्याकंन करते हुए जो बच्चा

- रुक–रुक कर व अक्षर जोड़कर पढ़ता है। (1)
- बच्चा वाक्य पढ़ता है। (2)
- बच्चा पढ़ता तो सही है पर विराम चिन्ह की अनुपालना नहीं करता है। (3)
- बच्चा अनुच्छेद पढ़ता है। (4)
- बच्चा विषयवस्तु को समझ के साथ पढ़ता है। (5)

लिखने का कौशल :

अध्यापिका एवं अध्यापक कक्षा में विभिन्न गतिविधियों के समय छात्र का लेखन कौशल जानेंगे।

- छात्र/छात्राएं पाठय पुस्तक, बोर्ड पर लिखे शब्द, वाक्य, अनुच्छेद को नकल करके लिखता है। (1.2)
- छात्र/छात्राएं आपके द्वारा मौखिक बोलने पर अपनी कापी में लिख पाते हैं। (3)
- छात्र दिए हुए विषय पर दस वाक्य या घटना को क्रमवार अपनी समझ से लिखता है। (4)
- छात्र स्वंय किसी भी विषय पर लिखकर अभिव्यक्ति करता है। (5)

● गणित :

गणित में लिखित कार्य–निरीक्षण मूल्यांकन की प्रमुख विधि है। लिखित कार्य का मूल्यांकन करते समय अध्यापक को निदानात्मक प्रक्रिया अपनानी चाहिए। अभ्यास द्वारा ही गणित विषय को सीखा जा सकता है।

उदाहरण : गणित में संख्याओं की जानकारी

क गणित में संख्या को पहचानता है तथा वस्तुओं के साथ मिलान करता है। (1.2)

ख संख्या को क्रमवार पहचानता है तथा लिख सकता है । संख्या को छोटे से बड़े क्रम में (आरोही) या बड़े से छोटे क्रम में (अवरोही) क्रमबद्ध कर लिख सकता है। (3)

ग वह संख्या के पूर्ववर्ती, परवर्ती व मध्यवर्ती संख्या को बता सकता है। (4)

घ यदि 1, 4, 7, या 1–5–10 इस तरह की संख्याएं दी गई हों तो वह इस क्रम को समझकर आगे कि संख्या को लिख सकता है। (5)

● पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा मात्र कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं है। कक्षा–कक्ष के बाहर एक दुनियां है जहां बच्चा अपने अनुभवों से सीखता है। वह बहुत सी घटनाओं का अवलोकन करता हैं , फिर अनुमान लगाता है, तथ्य एकत्र करता है तथा निष्कर्ष तक पहुंचता है। यह विधि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में अति महत्वपूर्ण है। अध्यापक प्रत्येक बच्चे का कक्षा कार्य, गृहकार्य, परियोजना कार्य, साप्ताहिक परीक्षण, मासिक परीक्षण इत्यादि का निरीक्षण करें और अध्यापक निरीक्षण रजिस्टर में अंकित करें।

उदाहरण : पांच सब्जियों की जानकारी देना ।

(क) बच्चा चित्र देखकर सिखाई गई पांच सब्जियों को पहचानता है (1)
(ख) ये सब्जियां किस रंग की है , बता पाता है । (2)
(ग) ये सब्जियां कहां उगाई जाती हैं, बता पाता है । (3)
(घ) इन सब्जियों की पौष्टिकता को बता सकता है । (4)
(ड•) वह कुछ अन्य सब्जियों की सूची भी बना सकता है जिनकी मिलती–जुलती विशेषता है। (5)

पाठकों से...

अध्यापकों, शिक्षाविदों, शिक्षा शास्त्रियों एवं समाज के बुद्धिजीवियों से इस पृष्ठ हेतु प्रारंभिक शिक्षा संबंधी विभिन्न लेख एवं रचनाएं निम्न पते पर आमंत्रित हैं।

राजेश शर्मा
राज्य परियोजना निदेशक,
राज्य परियोजना कार्यालय (सर्व शिक्षा अभियान),
डी.पी.ई.पी.भवन, लाल पानी, शिमला–171001

प्रस्तुति : ज्योति रावत

खण्ड स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान की गतिविधियां एवं उपलब्धियां

शिक्षा खण्ड मशोबरा–शिमला

मशोबरा शिक्षा खण्ड कुसुम्पटी 1 शिक्षा खण्ड से अलग होकर बना है। उस समय इसमें 62 प्राथमिक, 11 माध्यमिक, 4 उच्च व 2 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाएं हुआ करती थी। आज इसी खण्ड में 12 वरिष्ठ, 5 उच्च व 14 माध्यमिक पाठशालाएं बच्चों को शिक्षा देने का कार्य कर रही हैं। प्राथमिक स्तर पर 17 केन्द्र पाठशालाओं सहित 80 पाठशालाएं इस समय शिक्षा प्रदान कर रही है। कक्षा प्रथम से कक्षा आठवीं तक 7000 बच्चों को 400 अध्यापिकाएं अध्यापन कार्य करवा रहे हैं।

भौगोलिक स्थिति : यह खण्ड शिमला–करसोग, शिमला–कुफरी, शिमला–चाय, शिमला–जुन्गा, शिमला–पीरन राजमार्ग के आसपास के क्षेत्र में फैला है। नालदेहरा, कुफरी, मशोबरा, चीनी बंगला तथा क्रेगनैनो जैसे पर्यटन स्थल इसी खण्ड के अंतर्गत आते हैं। इसकी सीमा एक तरफ शिक्षा खण्ड शिमला से, दूसरी ओर सुन्नी व ठियोग से, तीसरे तरफ कुसुम्पटी–1 से व चौथी और सिरमौर व सोलन से लगती है।

सर्व शिक्षा अभियान से प्राप्त भवन व अन्य निर्माण कार्य :

इस खण्ड में एस.एस.ए. के अंतर्गत अतिरिक्त कमरे, शौचालय, पेयजल सुविधा, सी.आर.सी. भवन, चारदिवारी, रैंप्स, बच्चों के झूले व सी.एस. प्राप्त हुए जिनका काम पूर्ण रूप से सी.एस. को छोड़कर पूर्ण हो चुका है। नियमित भवन मरम्मत, फर्नीचर मरम्मत व खरीद, सी.एच.टी. कंटीजैन्सी, सी.एच.टी.टी.ए. व डी.ए. एवं मासिक बैठक की अनुदान राशि गत वर्ष की सभी पाठशालाओं ने उपयोग कर ली है।

चिकित्सा शिविर

गत वर्ष एस.एस.ए. के अंतर्गत खण्ड स्तर पर 421 बच्चों का चिकित्सा परीक्षण इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के चिकित्सकों द्वारा किया गया तथा उन्हें मुफ्त दवाइयां व अन्य उपकरण दिए गए। 32 छात्र एवं छात्राओं को नजर के चश्में दिएगए तथा अन्य उपकरण बांटे गए।

बालमेला

गत वर्ष खण्ड स्तर का बाल मेला राजकीय केन्द्रीय पाठशाला कोटी में मनाया गया। इस मेले में 270 बच्चों ने विभिन्न प्रकार की प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया।

टी.एल.एम. मेला राजकीय केन्द्रीय प्राथमिक पाठशाला भराड़िया में मनाया गया। इसमें 17 केन्द्रों से 205 बच्चों ने भाग लिया तथा विषयानुसार टी.एल.एम. स्वयं तथा अपने अध्यापकों की सहायता से तैयार किया गया। टी.एल.एम. की सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक के बच्चों ने भाग लिया।

सीडब्ल्यूएसएन बाल मेला

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए राजकीय केन्द्रीय प्राथमिक पाठशाला गुम्मा में बाल मेला आयोजित किया गया। इस मेले के आयोजन के पीछे उद्देश्य है कि इन बच्चों के अन्दर किसी प्रकार की हीन भावना पैदा न हो सके।

व्यावसायिक प्रशिक्षण कैंप

यह एक अनूठा प्रयास है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 40–40 बच्चों एवं अभिभावकों के क्रमशः दो कैंप केन्द्रीय प्राथमिक पाठशाला दुर्गापुर व गुम्मा में लगाए गए। इसमें संसाधन व्यक्ति के रूप में उन लोगों को बुलाया गया था जो कि कुर्सियां बुनने, किताबें कापी में गत्ते लगाने, मोमबत्तियां बनाने का काम व विभिन्न फलों एवं कंदमूलों के आचार डालने का काम जानते थे। इन कैंपों में उपस्थित सभी बच्चों व अभिभावकों ने इन जीवनोपयोगी साधनों को सीखा जो कि उनके जीविकोपार्जन के काम आएगा।

मीना सप्ताह

गत वर्ष यह कार्यक्रम खण्ड के दूरदराज केन्द्रीय पाठशाला पीरन में मनाया गया। बालिका शिक्षा हेतु चलाए गए इस कार्यक्रम में लगभग 400 छात्राओं एवं माताओं ने भाग लिया तथा सभी को बालिकाओं की अधिक से अधिक शिक्षा दिलाने हेतु प्रेरित किया गया।

मात -अध्यापक संघ सम्मेलन

इस सम्मेलन में पाठशाला में पढ़ने वाले छात्र– छात्राओं की माताओं व उन पाठशालाओं में कार्यरत अध्यापक–अध्यापिकाओं को एक मंच पर एकत्रित किया जाता है और उसके उपरांत बच्चों की अनेक समस्याओं पर माताएं व अध्यापक अध्यापिकाएं आपस में विचार–विमर्श करके उन समस्याओं को हल करने का प्रयास करते हैं। यह सम्मेलन मशोबरा खण्ड की एक दूर– दराज की पाठशाला बडबरथाना में किया गया। इसमें 355 माताओं व अध्यापक–अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

सतत् समग्र मूल्यांकन

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत 2007–08 में हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों के 13 शिक्षा खण्डों को सतत् समग्र मूल्यांकन के लिए कक्षा प्रथम से पंचम तक चुना गया जिनमें से जिला शिमला से खण्ड मशोबरा का चुनाव किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक मास में कक्षा के प्रत्येक बच्चे का तीन बार मूल्यांकन किया जाता है वह भी इस तरह कि बच्चे को पता नहीं चलता कि उसका मूल्यांकन किया जा रहा है जहां कक्षा में पढ़ाए गए विषयों का उपलब्धि स्तर का मूल्यांकन किया जाता है वहीं कक्षा से बाहर की छात्र की क्षमताओं का मूल्यांकन भी अध्यापक द्वारा किया जा रहा है।

अनुसंधान एवं मूल्यांकन

इसके अंतर्गत इसी वर्ष इस खण्ड को टी.एल.एम. की स्टडी दी गई थी। इस अध्ययन में भिन्न–भिन्न पाठशालाओं के अध्यापकों के टी.एल.एम. के विषयमें विचार जाने गए तथा उसे इस स्टडी में दर्ज किया गया। इस स्टडी में यह बात भी प्रकाश में आई कि शुरू–शुरू में अध्यापकों ने बाजार से बना बनाया टी.एल.एम. खरीदा। परन्तु बाद में यह प्रतिशतता बहुत कम रह गई और आजकल ज्यादातर टी.एल.एम. बच्चों द्वारा स्वयं तथा अध्यापक की सहायता से बनाया जा रहा है। इस अध्ययन की प्रतियां खण्ड, जिला तथा प्रदेश परियोजना अधिकारी को दी गई है। इसी के साथ इस खण्ड में ग्रामीण शिक्षा रजिस्टर (BER) पर भी कार्य किया गया। इस रजिस्टर को दोबारा इसी खण्ड के अध्यापक श्री राजेश कुमार प्र. कला स्नातक रा.व.मा.पा. बल्देयां द्वारा किया गया जिसे पूरे शिमला जिले में लागू किया गया तथा प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी इसे खूब सराहा गया।

नेहर लाल गौतम
खण्ड स्रोत समन्वयक (प्रा.)
मशोबरा, शिमला